

संपादकीय

प्रिय पाठको! इस बार हम जुलाई और अक्टूबर अंक का एक संयुक्तांक प्रकाशित कर रहे हैं। बच्चों को भाषा, संगीत, चित्रकला, नृत्य, व्यापार, संख्या ज्ञान, विज्ञान इत्यादि विषयों को शिक्षा के माध्यम से ही सिखाया जाता है। बच्चे देश का भविष्य होते हैं इसलिए उनके विकास का संपूर्ण रूप से ध्यान रखा जाता है, ताकि वे देश के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान करने योग्य बन सकें। इसके साथ ही वे अपने विचारों, प्रयोगों, नवाचारों एवं उपलब्धियों द्वारा देशहित में कार्य कर सकें। इसी आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेक सुधार किए जा रहे हैं, जिससे सभी बच्चों तक शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चित किया जा सके।

भाषा व्यक्ति के पास वह साधन है, जिसके माध्यम से वह अपने विचार, आवश्यकताओं एवं अनुभूति को व्यक्त कर सकता है और समझ सकता है, लेकिन यह संभव नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति एक ही भाषा बोलता हो। विश्व में अनेक भाषाएँ हैं। अतः व्यक्ति बचपन से ही मातृभाषा और मानक भाषा सीखता है। बुनियादी स्तर पर बच्चों का भाषाई विकास तीव्र गति से होता है, अतः बच्चों को दो से अधिक भाषाएँ सिखाने से बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक विकास तीव्रता से होता है। इसी पर आधारित शोध लेख 'बुनियादी साक्षरता में बहुभाषिकता का महत्व एवं विकास— चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ' इस अंक में प्रस्तुत किया गया है।

भाषा समाज के संचालन का एक प्रमुख साधन है, इसलिए भाषा का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। यदि किसी भाषा का उपयोग कम होने लगे तो वह

भाषा धीरे-धीरे लुप्त होने लगती है। इसलिए भाषाओं का संरक्षण शिक्षा और नीति-निर्माण के माध्यम से सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसी पर आधारित लेख 'दक्षिण भारत में क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण— शैक्षिक दृष्टिकोण और रणनीतियाँ' सम्मिलित किया गया है। इस लेख में वर्णित किया गया है कि स्थानीय भाषाओं में पाठ्यक्रम का विकास एवं डिजिटल शिक्षा सामग्री के निर्माण से विद्यार्थियों को उनकी भाषा और संस्कृति के प्रति सम्मान का अनुभव हो।

किसी भी देश की शिक्षा नीति तभी सफल हो सकती है, जब उस देश के विद्यालयों में शिक्षा का परिवेश बच्चों के अनुकूल हो। ऐसे परिवेश में बच्चों को स्वयं सीखने के अधिक से अधिक अवसर मिलते हैं। इसके साथ ही, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान सिखाने के लिए औपचारिक रूप से रुचिपूर्ण शिक्षण-अधिगम किया जाना चाहिए। इसी पर आधारित लेख 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा तथा शुरूआती औपचारिक शिक्षा की स्थिति' में ई.सी.सी.ई. की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। ई.सी.सी.ई. शिक्षा का एक महत्वपूर्ण आयाम है। इसमें औपचारिक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा, अनौपचारिक एवं घरेलू बाल देखभाल कार्यक्रम और अभिभावक शिक्षा कार्यक्रम सम्मिलित हैं, इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों का संपूर्ण विकास हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा तक सभी की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया गया है। इसी पर आधारित लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में सभी के लिए अधिगम' इस अंक में प्रस्तुत किया गया है। इस

लेख में सभी वर्गों के लिए समान शिक्षा की उपयोगिता को दर्शाया गया है, विशेषकर उस समूह वर्ग के संदर्भ में जो किसी कारणवश शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रहा है।

शिक्षा एक ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति अपने जीवन में प्रगति एवं विकास करता है। शिक्षा व्यक्ति को जागरूक एवं तर्कसंगत निर्णय लेने योग्य बनाती है। इसके साथ ही, शिक्षा द्वारा अर्जित ज्ञान के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं एवं समस्याओं का समाधान करता है और अपने जीवन को सुगमता से व्यतीत कर सकता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अक्षर एवं संख्या ज्ञान होना आवश्यक है, जिन्हें वह किसी भी आयु में पढ़कर साक्षर हो सकता है। इसी विषय पर आधारित लेख 'अक्षरदात्री माँ श्रीमती वेल्दी होनसिंगर फिशर' सम्मिलित किया गया है। इस लेख में श्रीमती वेल्दी होनसिंगर फिशर द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के अंतर्गत लोगों को साक्षर बनाने में दिए गए योगदान एवं कृतित्व का उल्लेख किया गया है। उन्होंने लोगों को शोषण के विरुद्ध जागरूक करने के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन माना था। इसी बात को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी एक सार्थक पहलू के रूप में स्वीकार किया गया है।

शिक्षक-संदर्शिका, शिक्षकों को शिक्षक-अधिगम-आकलन कार्य करने में मार्गदर्शक का कार्य करती है। इसका उपयोग कर शिक्षक अपने शिक्षण-अधिगम में सुधार कर सकते हैं। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक संदर्शिका की भूमिका' पत्रिका में दिया गया है। इस गुणवत्तापूर्ण के लिए शिक्षक संदर्शिका की आवश्यकता एवं महत्व का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही इसमें भाषा एवं गणित की

शिक्षक-संदर्शिका से संबंधित समस्याओं एवं सुझावों को भी प्रस्तुत किया गया है।

विज्ञान की प्रगति के साथ शैक्षिक तकनीकी में भी प्रगति हो रही है। वर्तमान समय में शैक्षिक प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) के कारण शिक्षा को एक बेहतर तकनीकी आधार प्राप्त हुआ है। इस तकनीकी विकास के माध्यम से सभी विद्यार्थियों के लिए समान शिक्षा तक पहुँच को सुनिश्चित कर तथा शिक्षण-अधिगम को सुगम बनाया जा सकता है। इसी पर आधारित लेख 'समावेशी शिक्षण-अधिगम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में' प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में समावेशी शिक्षण-अधिगम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सहयोग से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने, शैक्षिक एवं सामाजिक गतिविधियों में संपूर्ण रूप से भाग लेने के समान अवसर, चिंतन कौशल, समस्या-समाधान क्षमताओं तथा डिजिटल साक्षरता के विकास को सुविधाजनक बनाने पर चर्चा की गई है।

समानता एवं न्याय के अभाव में देश का विकास होना संभव नहीं है। समाज में न्याय एवं समानता को स्थापित करने में कानूनों की भूमिका का बहुत महत्व है, क्योंकि सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों को समाज में प्रगति एवं विकास करने में इन कानूनों के माध्यम से सहायता प्राप्त होती है। इसके साथ ही, भविष्य में भी समानता एवं समावेशन को सुनिश्चित करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी विषय पर आधारित लेख 'विद्यालयी शिक्षा में विधिक शिक्षा द्वारा न्याय, समानता और समावेशिता सुनिश्चित करने वाले नए कानूनों की भूमिका का विश्लेषण' प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में विधिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों

के साथ-साथ साक्ष्य-आधारित, न्याय के सिद्धांतों, न्यायशास्त्र के अभ्यास और अन्य संबंधित विषयों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व होना चाहिए, पर चर्चा की गई है।

शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन होना सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही, शिक्षण-अधिगम एवं आकलन विधियों में भी परिवर्तन लाना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थियों के अधिगम का सार्थक आकलन किया जा सके। इस अंक में 'परियोजना आधारित अधिगम में सहकर्मी आकलन' नामक शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उल्लेख किया गया है कि परियोजना आधारित अधिगम के माध्यम से विद्यार्थी अपने साथियों के कार्यों का आकलन करते हैं और यह आकलन उनको अपने सीखने का स्वामित्व लेने हेतु प्रोत्साहित करता है तथा अपने विकास के लिए ज़िम्मेदारी की भावना को भी बढ़ाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में उद्यमशीलता की मानसिकता का विकास करना है। इसलिए विद्यार्थियों में उद्यमिता शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए क्रियात्मक शिक्षण-अधिगम विधियाँ अधिक प्रभावी होती हैं, जो विद्यार्थियों को प्रायोगिक एवं अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान कर उनमें उद्यमिता कौशल एवं ज्ञान को बढ़ावा देती हैं। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'बहुआयामी शिक्षण विधियों के माध्यम से भावी शिक्षकों में उद्यमशीलता की मानसिकता का विकास' इस अंक में प्रस्तुत किया गया है।

प्राचीन भारतीय शास्त्रों एवं ग्रंथों में समाज एवं व्यावहारिक जीवन से संबंधित विविध ज्ञानवर्धक एवं कल्याणकारी जीवनयापन से संबंधित जानकारीयें वर्णित की हैं। व्यक्ति को समाज में किस प्रकार व्यवहार

करना चाहिए और जीवनयापन हेतु व्यापार करने के क्या नियम हों?, इन सबका विस्तृत विवरण शास्त्रों में लिपिबद्ध किया गया है। इसी पर आधारित लेख 'शुक्रनीति में वर्णित वाणिज्यिक संप्रत्यय' प्रस्तुत किया गया है। इसमें शुक्राचार्य द्वारा रचित शुक्रनीति में वर्णित वार्ता (वाणिज्य एवं व्यापार) संबंधित तथ्यों को वर्तमान वाणिज्यिक संप्रत्ययों जैसे कार्यालयी कार्यों में उपयोग होने वाले पत्र व्यवहार, आय-व्यय, ब्याज, शुल्क, लेखांकन इत्यादि की उपयोगिता का उल्लेख किया गया है।

विद्यार्थियों के जीवन में शैक्षिक पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह विद्यार्थियों को शिक्षा से संबंधित नए विचारों, समीक्षाओं, शैक्षिक समस्या-समाधान, अनुभवों तथा परिणामों को साझा करने के लिए मंच प्रदान करती है। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' प्रस्तुत किया गया है। इसमें लेखों एवं शोध-पत्रों के प्रकाशन की संख्या, लेखों एवं शोध-पत्रों की विविधता, लेखकों की सहभागिता, लेखों एवं शोध-पत्रों की पृष्ठ संख्या के अनुसार वितरण और उनमें दिए गए संदर्भों की संख्या के वितरण आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने अनुभव आधारित मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध-पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, क्षेत्र (फील्ड) अनुभव आदि प्रकाशन हेतु कवर 3 पर दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादक समिति